

## महिला श्रमबल भागीदारी की राह में बाधाएँ

### प्रलिस के लयि:

महिला श्रम बल भागीदारी, वैतनकि असमानताएँ, लैंगकि असमानता, महिला श्रम बल भागीदारी दर, मानव पूंजी वकिस

### मेन्स के लयि:

महिला श्रम बल भागीदारी की राह में बाधाएँ

## चर्चा में क्यों?

हाल ही में तमलिनाडु सरकार ने महिलाओं के अवैतनकि श्रम को मान्यता प्रदान करते हुए महिलाओं के लयि कलेगनार मगलरि उरीमाई थोगई थट्टिम, एक बुनयिदी आय योजना की शुरुआत की है। इस योजना के तहत पात्र परिवारों की महिलाओं को प्रतमाह 1,000 रुपए दयि जाएंगे।

- वैवाहकि जीवन में एक महिला बच्चे को जनुम देने के साथ-साथ उसका पालन-पोषण करती है तथा घर का भी ध्यान रखती है, महिलाओं को इस अवैतनकि देखभाल और घरेलू काम के लयि कोई भुगतान नहीं कयि जाता है, ऐसे में श्रम बल में उनकी भागीदारी में बाधा आती है।

## महिला श्रम बल भागीदारी में कमी का कारण:

- पतृसत्तात्मक सामाजकि प्रथा:
  - पतृसत्तात्मक मानदंड और लैंगकि आधार पर नरिदषिट पारंपरकि भूमकिाएँ अकसर महिलाओं की शकिषा और रोजगार के अवसरों तक पहुँच को सीमति करती हैं।
  - गृहणि के रूप में महिलाओं की भूमकि के संबध में सामाजकि अपेक्षाएँ श्रम बल में उनकी सकरयि भागीदारी को हतोत्साहति करती है।
- पारश्रमकि में अंतर:
  - भारत में महिलाओं को अकसर समान काम के लयि पुरुषों की तुलना में वैतनकि असमानता/कम वेतन की समस्या का सामना करना पडता है।
  - वशिष असमानता रिपिरट, 2022 के अनुसार, भारत में 82% श्रम आय पर पुरुषों का कबजा है, जबकि श्रम आय पर महिलाओं की हसिसेदारी केवल 18% है।
  - वेतन का यह अंतर महिलाओं को औपचारकि रोजगार के अवसर तलाशने से हतोत्साहति कर सकता है।
- अवैतनकि देखभाल कार्य:
  - अवैतनकि देखभाल और घरेलू कार्य का महिलाओं पर असंगत रूप से दबाव पडता है, जसिसे भुगतान वाले रोजगार के लयि उनका समय और ऊर्जा सीमति हो जाती है।
    - भारत में ववाहति महिलाएँ अवैतनकि देखभाल और घरेलू काम पर प्रतदिनि 7 घंटे से अधिक समय का योगदान करती हैं, जबकि पुरुष 3 घंटे से भी कम समय का योगदान करते हैं।
    - यह प्रचलन (महिलाओं की स्थति) वभिन्नि आय स्तर और जातिसमूहों में समान रूप से देखा जा सकता है, जसिसे घरेलू जमिेदारयिों के मामले में गंभीर लैंगकि असमानता की स्थति उत्पन्न होती है।
  - घरेलू जमिेदारयिों का यह असमान वतिरण श्रम बल में महिलाओं की महत्त्वपूर्ण भागीदारी में बाधा बन सकता है।
- सामाजकि और सांस्कृतकि पूर्वाग्रह:
  - कुछ समुदायों में घर से बाहर काम करने वाली महिलाओं को पूर्वाग्रह का सामना करना पड सकता है जसिसे श्रम बल भागीदारी दर कम हो सकती है।

## महिलाओं द्वारा अवैतनकि घरेलू कार्य/देखभाल संबधी आँकडे:

- महिला श्रम बल भागीदारी दर (LFPR):
  - कक्षा 10 में लडकयिों की नामांकन दर में वृद्धकिे बावजूद पछिले दो दशकों में भारत की महिला श्रम बल भागीदारी दर 30% से घटकर

24% हो गई है।

- घरेलू काम का बोझ महिला श्रम बल भागीदारी दर को कम करने में एक प्रमुख कारक है, यहाँ तक कि शिक्षित महिलाओं में भी।
  - भारत की महिला श्रम बल भागीदारी दर (24%) ब्रिक्स देशों और चुनदा दक्षिण एशियाई देशों में सबसे कम है।
  - सबसे अधिक महिला आबादी वाला देश चीन 61% के साथ सबसे अधिक महिला श्रम बल भागीदारी दर का दावा करता है।
- महिला रोज़गार पर प्रभाव:
  - जो महिलाएँ श्रम बल में शामिल नहीं हैं, वे प्रतिदिन औसतन 457 मिनट (7.5 घंटे) यानी सबसे अधिक समय अवैतनिक घरेलू/देखभाल कार्य पर खर्च करती हैं।
  - नौकरीपेशा महिलाएँ इस तरह के कामों में प्रतिदिन 348 मिनट (5.8 घंटे) खर्च करती हैं, जिससे भुगतान वाले काम में संलग्न होने की उनकी क्षमता प्रभावित होती है।

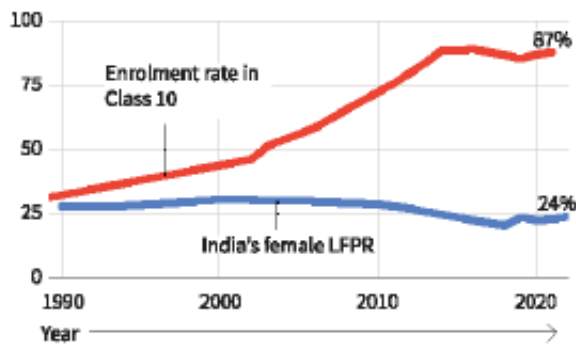


# An unequal burden

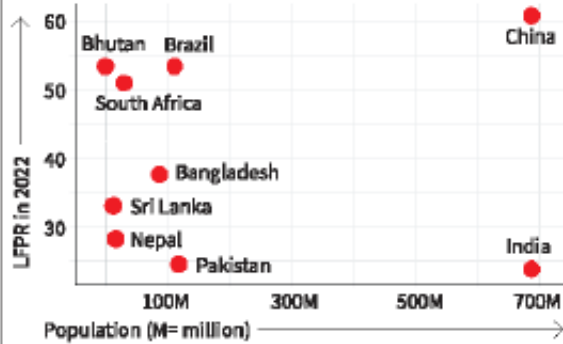
The charts are based on data collated from the World Bank website and the Time Use Survey (2019) by the National Sample Survey Office



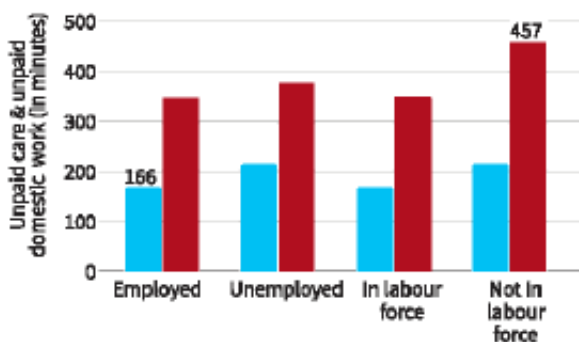
**Chart 1** | The chart shows female LFPR in India and the enrolment rate for girls in Class 10 since 1990



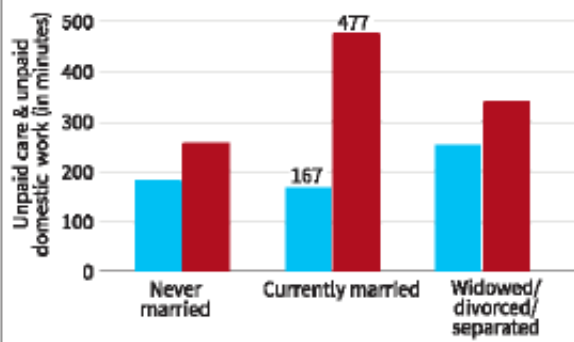
**Chart 2** | The chart compares India's 2022 female LFPR to that of other BRICS countries and select South Asian countries



**Chart 3** | Average time (in minutes) spent on unpaid care during a day for men and women across employment groups



**Chart 4** | Average time spent (in minutes) on unpaid care in a day by men and women categorised by marital status



Anushka Kataruka and Hashika Sharma are interning with The Hindu Data Team

## श्रम बल में महिलाओं की उच्च भागीदारी का समाज पर व्यापक प्रभाव:

### ■ आर्थिक विकास:

- श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी सीधे आर्थिक विकास से संबंधित है। जब महिला आबादी के एक महत्वपूर्ण हिस्से का उपयोग कम हो जाता है तो इसके परिणामस्वरूप संभावित उत्पादकता और आर्थिक उत्पादन का नुकसान होता है।

- श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि **उच्च सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product- GDP)** और समग्र आर्थिक समृद्धि में योगदान कर सकती है।
- **गरीबी का न्यूनीकरण:**
  - महिलाओं को आय-अर्जति करने के अवसरों तक पहुँच प्रदान करने से यह उनके परिवारों को गरीबी रेखा से बाहर निकालने में मदद कर सकती है जिससे जीवन स्तर बेहतर हो सकता है तथा परिवारों की स्थिति में सुधार हो सकता है।
- **मानव पूंजी विकास:**
  - शक्ति और आर्थिक रूप से सक्रिय महिलाएँ अपने बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य परणामों पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं जिसके अंतर-पीढ़ीगत लाभ हो सकते हैं।
- **लैंगिक समानता और सशक्तीकरण:**
  - श्रम बल में महिलाओं की उच्च भागीदारी से पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं और मानदंडों को चुनौती दी जा सकती है जिससे लैंगिक समानता को बढ़ावा मिला जा सकता है।
  - आर्थिक सशक्तीकरण महिलाओं को अपने जीवन, निर्णय लेने की शक्ति और स्वायत्तता पर अधिक नियंत्रण रखने में सक्षम बनाता है।
- **प्रजनन क्षमता और जनसंख्या वृद्धि:**
  - अध्ययनों से पता चला है कि श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने से प्रजनन दर में कमी आती है।
  - 'फर्टिलिटी ट्रांज़िशन' के नाम से जानी जाने वाली इस घटना का संबंध शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और परिवार नियोजन तक बेहतर पहुँच से है, जिसके परिणामस्वरूप जनसंख्या का अधिक सतत् विकास होता है।
- **लगातारता हिसा में कमी:**
  - आर्थिक सशक्तीकरण महिलाओं की सौदेबाज़ी की शक्ति को बढ़ा सकता है तथा **लगातारता हिसा** और अपमानजनक रीतियों के प्रति उनकी **संवेदनशीलता** को कम कर सकता है।
- **श्रमिक बाज़ार और टैलेंट पूल:**
  - श्रमबल में महिलाओं की सहभागिता बढ़ाने से **कौशल की कमी और श्रमिक बाज़ार के असंतुलन** को दूर करने में सहायता मिल सकती है, जिससे प्रतिभा और संसाधनों का अधिक कुशल आवंटन हो सकेगा।

## महिला सशक्तीकरण से संबंधित सरकारी योजनाएँ:

- [बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना](#)
- [वन स्टॉप सेंटर योजना](#)
- [स्वाधार गृह](#)
- [नारी शक्ति पुरस्कार](#)
- [महिला पुलिस सवयसेवक](#)
- [महिला शक्ति केंद्र \(MSK\)](#)
- [नरिभया फंड](#)

## आगे की राह

- लैंगिक समानता से संबंधित चर्चा के मुद्दे पर **महिलाओं के घरेलू कार्य और कार्यात्मक जीवन में वभिजन** करना बंद करके महिलाओं के औपचारिक एवं अनौपचारिक सभी कार्यों को महत्त्व देना होगा।
- **सांस्कृतिक संदर्भ और** स्वायत्तता को ध्यान में रखते हुए महिलाओं के लिये कार्य विकल्पों पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है।
- **महिलाओं की श्रम शक्ति में उच्चतर सहभागिता** को बढ़ावा देना और समर्थन करना न केवल लैंगिक समानता का मामला है, बल्कि **सामाजिक** प्रगति और विकास का एक महत्त्वपूर्ण संचालक भी है।
- **कार्यबल में महिलाओं की संपूर्ण क्षमता का उपयोग करने से सामाजिक-आर्थिक विकास**, निर्धनता में कमी, बेहतर मानव पूंजी और अधिक समावेशी एवं न्यायसंगतता से संपूर्ण समाज को फायदा हो सकता है।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

**??????????:**

प्रश्न. नमिनलखिति में से कौन-सा वशि्व के देशों के लिये 'सार्वभौमिक लैंगिक अंतराल सूचकांक' का श्रेणीकरण प्रदान करता है? (2017)

- वशि्व आर्थिक मंच
- संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद
- संयुक्त राष्ट्र महिला (UN वुमन)
- वशि्व स्वास्थ्य संगठन

उत्तर: (a)

मेन्स:

प्रश्न: "महिलाओं का सशक्तीकरण जनसंख्या वृद्धि को नयितरति करने की कुंजी है।" वविचना कीजयि। (2019)

स्रोत: द हद्वि

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/barrier-to-women-s-labor-force-participation>

